03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

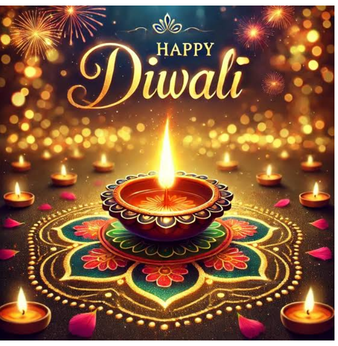

"मीठे बच्चे - तुम हो सच्चे-सच्चे परवाने जो अभी शमा पर फिदा होते हो, इस फिदा होने का ही यादगार यह दीपावली है"

प्रश्नः- बाबा ने अपने बच्चों को कौन-सा समाचार सुनाया है?

उत्तर:- बाबा ने सुनाया - तुम आत्मायें निर्वाणधाम से कैसे आती हो और मैं कैसे आता हूँ। मैं कौन हूँ, क्या करता हूँ, कैसे रामराज्य स्थापन करता हूँ, कैसे तुम बच्चों को रावण पर विजय पहनाता हूँ। अभी तुम बच्चे इन सब बातों को जानते हो। तुम्हारी ज्योति जगी हुई हैं।

गीत:-तुम्हीं हो माता पिता........ Click

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना। आत्माओं ने इन जिस्मानी कर्मेन्द्रियों से गीत सुना। गीत में पहले तो ठीक था। पिछाड़ी को फिर भक्ति के अक्षर थे। तुम्हारे चरणों की धूल हैं। अब

How Sweet...!

03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

चरणों मे जगह मांगी थी,
हमें दिल मे बसा लिया,
थे एक नजर के प्यासे,
नजरों में समा लिया,
आपका शुक्रिया, आपका शुक्रिया..

बच्चे चरणों की धूल थोड़ही होते हैं। यह रांग है। बाप बच्चों को राइट अक्षर समझाते हैं। बाप आते भी वहाँ से हैं जहाँ से बच्चे आते हैं, वह है निर्वाणधाम। बच्चों को सबके आने का समाचार तो सुनाया। अपना भी सुनाया कि मैं कैसे आता हूँ, आकरके क्या करता हूँ। रामराज्य स्थापन करने अर्थ रावण पर विजय पहनाते हैं। बच्चे जानते हैं - रामराज्य और रावणराज्य इस पृथ्वी पर ही कहेंगे। अभी तुम विश्व के मालिक बनते हो। धरती, आसमान, सूर्य आदि सब तुम्हारे हाथ आ जाते हैं। तो कहेंगे रावणराज्य सारे विश्व पर और रामराज्य भी सारे विश्व पर है। रावणराज्य में कितने करोड़ हैं, रामराज्य में थोड़े होते हैं फिर धीरे-धीरे वृद्धि को पाते हैं। रावणराज्य में वृद्धि बहुत होती है क्योंकि मनुष्य विकारी बन जाते हैं। रामराज्य में हैं निर्विकारी। मनुष्यों की ही कहानी है। तो राम भी बेहद का मालिक, रावण भी बेहद का मालिक है। अभी कितने अनेक धर्म हैं। गाया हुआ है अनेक धर्मों का विनाश। बाबा ने झाड़ पर भी समझाया है।

Point to be Noted

Point to ponder deeply...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अब दशहरा मनाते हैं, रावण को जलाते हैं। यह है हद का जलाना। तुम्हारी तो है बेहद की बात। रावण को भी सिर्फ भारत-वासी ही जलाते हैं, विदेश में भी जहाँ-जहाँ भारतवासी जास्ती होंगे वहाँ भी जलायेंगे। वह है हद का दशहरा। दिखाते हैं लंका में रावण राज्य करते थे, सीता को चुराकर लंका में ले गया। यह हो गई हद की बातें। अब बाप कहते हैं सारे विश्व पर रावण का राज्य है। रामराज्य अब नहीं है। रामराज्य अर्थात् ईश्वर का स्थापन किया हुआ। सतयुग को कहा जाता है रामराज्य। माला सिमरते हैं, रघुपति राघव राजाराम कहते हैं लेकिन राजाराम को नहीं सिमरते हैं, जो सारे विश्व की सेवा करते हैं, उनकी माला सिमरते हैं।

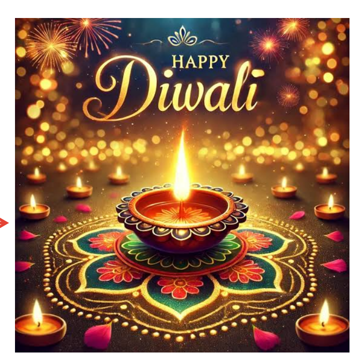

भारतवासी दशहरे के बाद फिर दीपावली मनाते

हैं। दीपावली क्यों मनाते हैं? क्योंकि देवताओं की ताजपोशी होती है। कारोनेशन पर बत्तियां आदि बहुत जलाते हैं। एक तो ताजपोशी दूसरा फिर कहा जाता है - घर-घर में दीपमाला। हर एक आत्मा की ज्योत जग जाती है। अभी सब आत्माओं की ज्योति उझाई हुई है। आइरन एजड है यानी अन्धियारा है। अन्धियारा माना भक्ति मार्ग। भक्ति करते-करते ज्योत कम हो जाती है। बाकी वह दीपमाला तो आर्टीफिशियल है। ऐसे नहीं कि कारोनेशन होता है तो आतिशबाजी जलाते हैं। दीपमाला पर लक्ष्मी को बुलाते हैं। पूजा करते हैं। यह उत्सव हैं भक्ति मार्ग के। जो भी राजा तख्त पर बैठते हैं तो उनका कारोनेशन डे धूमधाम से मनाया जाता है। यह सब हैं हद के। अभी तो बेहद का विनाश, सच्चा-सच्चा दशहरा होना है। बाप आये हैं सबकी ज्योत जगाने। मनुष्य समझते हैं हमारी ज्योत बड़ी ज्योत से मिल जायेगी। ब्रह्म समाजियों के मन्दिर में सदैव ज्योत जगती है। समझते हैं जैसे परवाने ज्योति पर फेरी पहन फिदा होते हैं वैसे हमारी भी आत्मा अब बड़ी

समझा?

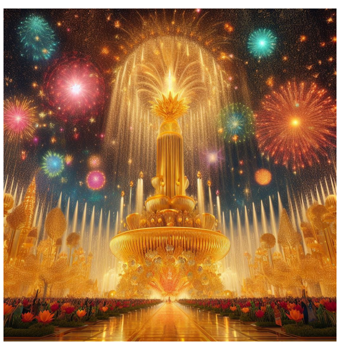

So, Be Prepared

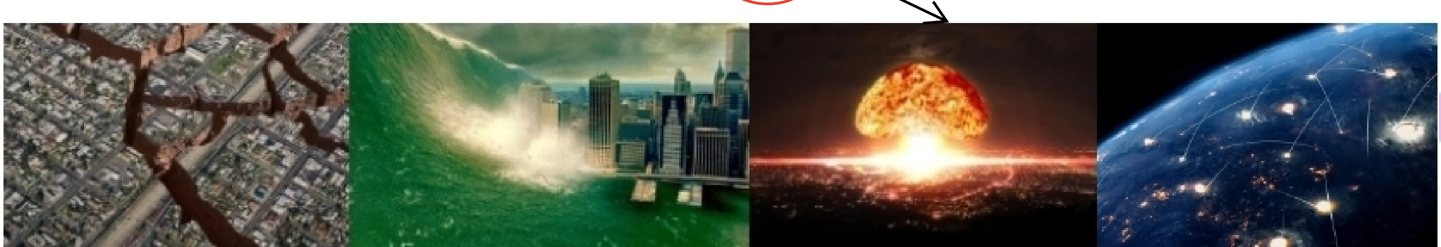

(शमा कहे परवाने से,
परे चला जा
मेरी तरह जल जायेगा,
यहाँ नहीं आ) - (२)
वो नहीं सुनता उसको
जल जाना होता है
हर ख़ुशी से, हर ग़म से,
बेगाना होता है

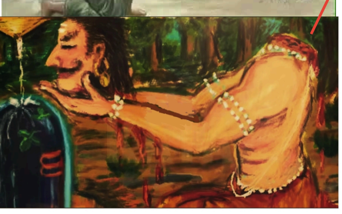

03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ज्योति में मिल जायेगी। इस पर दृष्टान्त बनाया है। अभी तुम हो आधाकल्प के आशिक। तुम आकर एक माशूक पर फिदा हुए हो, जलने की तो बात नहीं। जैसे वह आशिक-माशूक होते हैं तो वह एक-दो के आशिक बन जाते हैं। यहाँ वह एक ही माशूक है, बाकी सब हैं आशिक। आशिक उस माशूक को भक्तिमार्ग में याद करते रहते हैं। याद करो... माशूक आप आओ तो हम तुम्हारे पर बलि चढ़ें। तुम्हारे सिवाए हम किसको भी याद नहीं करेंगे। यह तुम्हारा जिस्मानी लव नहीं है। उन आशिक-माशूक का जिस्मानी लव होता है। बस एक-दो को देखते रहते हैं, देखने से ही जैसे तृप्त हो जाते हैं। यहाँ तो एक माशूक बाकी सब हैं आशिक। सब बाप को याद करते हैं। भल कोई नेचर आदि को भी मानते हैं। फिर भी ओ गॉड, हे भगवान मुख से जरूर निकलता है। सब उनको बुलाते हैं, हमारे दु:ख दूर करो। भक्तिमार्ग में तो बहुत आशिक-माशूक होते हैं, कोई किसका आशिक, कोई किसका आशिक। हनूमान के कितने आशिक होंगे? सब अपने-अपने माशूक के चित्र बनाकर फिर

03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

आपस में मिलकर बैठ उनकी पूजा करते हैं। पूजा कर फिर माशूक को डुबो देते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं निकलता। यहाँ वह बात नहीं। यह तुम्हारा माशूक एवर गोरा है, कभी सांवरा बनता नहीं। बाप मुसाफिर आकर सबको गोरा बनाते हैं। तुम भी मुसाफिर हो ना। दूरदेश से आकर यहाँ पार्ट बजाते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। अभी तुम त्रिकाल-दर्शी बन गये हो। रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो तो तुम हो गये त्रिकालदर्शी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। जैसे जगदगुरु आदि का भी टाइटिल मिलता है ना। तुमको यह टाइटिल मिलता है। तुमको सबसे अच्छा टाइटिल मिलता है स्वदर्शन चक्रधारी। तुम ब्राह्मण ही स्वदर्शन चक्रधारी हो या शिवबाबा भी है? (शिवबाबा भी हैं) हाँ, क्योंकि स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा होती है ना - शरीर के साथ। बाप भी इसमें आकर समझाते हैं। शिवबाबा स्वदर्शन चक्रधारी न हो तो तुमको कैसे बनाये। वह सबसे सुप्रीम ऊंच ते ऊंच आत्मा है। देह को थोड़ेही कहा जाता। वह सुप्रीम बाप ही आकर

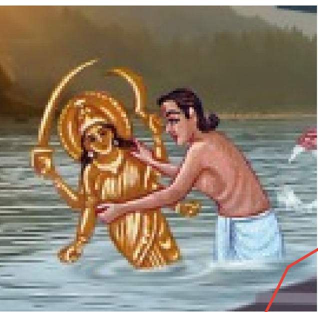

very Sweet Song at last pages

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वत: ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay (7)

Question & Answer

Point to be Noted

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुमको सुप्रीम बनाते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी आत्माओं के सिवाए कोई बन न सके। कौन सी आत्मायें? जो ब्राह्मण धर्म में हैं। जब शूद्र धर्म में थे, तो नहीं जानते थे। अब बाप द्वारा तुमने जाना है। कितनी अच्छी-अच्छी बातें हैं। तुम ही सुनते हो और खुश होते हो। बाहर वाले यह सुनें तो आश्चर्य खायें, ओहो! यह तो बहुत ऊंच ज्ञान है। अच्छा तुम भी ऐसा स्वदर्शन चक्रधारी बनो तो फिर चक्रवर्ती राजा विश्व का मालिक बन जायेंगे। यहाँ से बाहर गये खलास। माया इतनी बहादुर है, यहाँ की यहाँ रही। जैसे गर्भ में बच्चा अन्ज़ाम (वायदा) कर निकलता है फिर भी वहाँ की वहाँ रह जाती है। तुम प्रदर्शनी आदि में समझाते हो, बहुत अच्छा-अच्छा करते हैं। नॉलेज बहुत अच्छी है, मैं ऐसा पुरुषार्थ करूँगा, यह करुँगा.....। बस बाहर निकला, वहाँ की वहाँ रही। परन्तु फिर भी कुछ न कुछ असर रहता है। ऐसे नहीं कि वह फिर आयेंगे नहीं। झाड़ की वृद्धि होती जायेगी। झाड़ वृद्धि को पायेगा तो फिर सबको खीचेंगे। अभी तो यह है रौरव नर्क। गरूड़ पुराण में भी ऐसी-ऐसी रोचक

So sweet...!

How lucky and Great we are...!

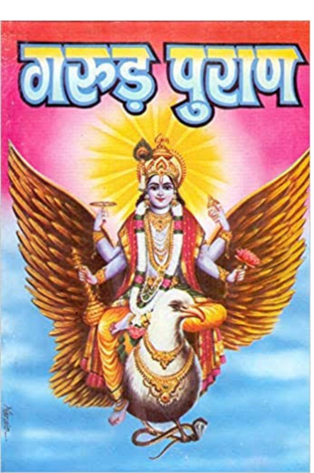

बातें लिखी हैं, जो मनुष्यों को सुनाते हैं ताकि कुछ डर रहे। उनसे ही निकला है कि मनुष्य सर्प बिच्छू आदि बनते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको विषय वैतरणी नदी से निकाल क्षीरसागर में भेज देता हूँ। असुल तुम शान्तिधाम के निवासी थे। फिर सुखधाम में पार्ट बजाने आये। अभी फिर हम जाते हैं शान्तिधाम और सुखधाम। यह धाम तो याद करेंगे ना। गाते भी हैं तुम मात-पिता...... वह सुख घनेरे तो होते ही हैं सतयुग में। अभी है संगम। यहाँ पिछाड़ी में त्राहि-त्राहि करेंगे क्योंकि अति दु:ख होता है। फिर सतयुग में अति सुख होगा। अति सुख और अति दु:ख का यह खेल बना हुआ है। विष्णु अवतार भी दिखाते हैं। लक्ष्मी-नारायण का जोड़ा जैसे ऊपर से आते हैं। अब ऊपर से शरीरधारी कोई आते थोड़ेही हैं। ऊपर से आती तो हर एक आत्मा है। परन्तु ईश्वर का अवतरण बहुत विचित्र है, वही आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। उनका त्योहार शिवजयन्ती मनाते हैं। अगर मालूम होता कि परमपिता परमात्मा शिव ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं तो फिर सारे विश्व में

52. तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे। (गुरुग्रंथ साहब)
आप ही हमारे मात-पिता हो। हम आपकी सन्तान हैं। आपकी कृपा से हमें अपार सुख प्राप्त होता है। शिव बाबा अपने बच्चों को पढ़ाई पढ़ाते हैं यही उनकी कृपा है। ब्राह्मण बच्चों को ध्यान से पढ़ाई पढ़ना है और अपने आपको सौभाग्यशाली बनाना है।

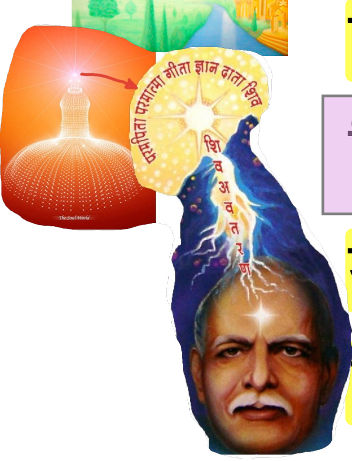

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

ints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

गॉड फादर का त्योहार मनाते। बेहद के बाप का यादगार मनायें तब जब समझें कि शिवबाबा ही लिबरेटर, गाइड है। उनका जन्म ही भारत में होता है। शिव जयन्ती भी भारत में मनाते हैं। परन्तु पूरी पहचान नहीं तो हॉलीडे भी नहीं करते हैं। जो बाप सर्व की सद्गति करने वाला, उनकी जन्म भूमि जहाँ अलौकिक कर्तव्य आकर करते हैं, उनका जन्म दिन और तीर्थ यात्रा तो बहुत मनानी चाहिए। तुम्हारा यादगार मन्दिर भी यहाँ ही है। परन्तु किसको पता नहीं है कि शिवबाबा ही आकर लिबरेटर, गाइड बनता है। कहते सब हैं कि सब दु:खों से छुड़ाकर सुखधाम में ले चलो परन्तु समझते नहीं। भारत बहुत ऊंच ते ऊंच खण्ड है। भारत की महिमा अपरमअपार गाई हुई है। वहाँ ही शिवबाबा का जन्म होता है, उनको कोई मानते नहीं। स्टैम्प नहीं बनाते। औरों की तो बहुत बनाते रहते हैं। अब कैसे समझाया जाए जो इनके महत्व का सबको पता पड़े। विलायत में भी संन्यासी आदि जाकर भारत का प्राचीन योग सिखलाते हैं, जब तुम यह राजयोग बतायेंगे तो तुम्हारा बहुत

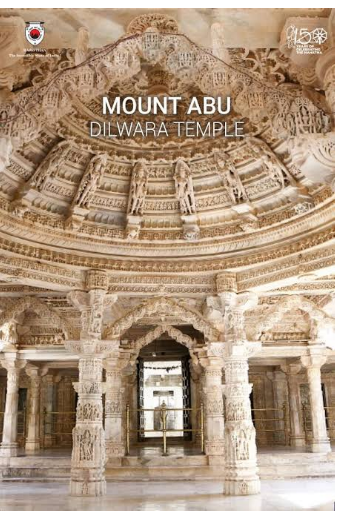

नाम होगा। बोलो, राजयोग किसने सिखाया था, यह किसको पता नहीं है। कृष्ण ने भी हठयोग तो सिखाया नहीं। यह हठयोग है संन्यासियों का। जो बहुत अच्छे पढ़े-लिखे हैं जो अपने को फिलॉसाफर कहलाते हैं, वह इन बातों को समझ और सुधर जाएं, कहें हमने भी शास्त्र पढ़े हैं, परन्तु

ये पक्का समझ लो..

अब जो बाप सुनाते हैं वह राइट है। बाकी सब है रांग। तो यह भी समझें कि बरोबर बड़े से बड़ा तीर्थ स्थान यह है, जहाँ बाप आते हैं। तुम बच्चे जानते हो इसको कहा जाता है - धर्म भूमि। यहाँ जितने धर्मात्मा रहते हैं उतने और कहाँ नहीं। तुम कितना दान-पुण्य करते हो। बाप को जानकर, तन-मन-धन सब इस सेवा में लगा देते हो। बाप ही

Exclusive Authority of Shiv baba

सबको लिबरेट करते हैं। सबको दु:ख से छुड़ाते हैं। और धर्म स्थापक कोई दु:ख से नहीं छुड़ाते हैं। वह तो आते ही हैं उनके पिछाड़ी। नम्बरवार सब पार्ट बजाने आते हैं। पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर बाप आकर सतोप्रधान बनाते हैं। तो यह भारत कितना बड़ा तीर्थ है। भारत सबसे नम्बरवन ऊंच भूमि है। बाप कहते हैं मेरी यह जन्म

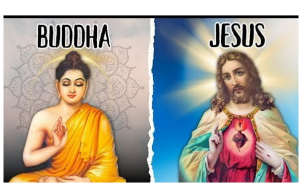

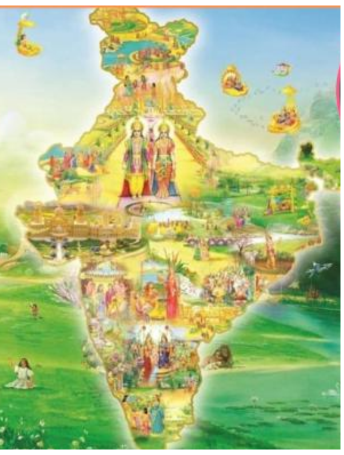

भूमि है। मैं आकर सबकी सद्गति करता हूँ। भारत को हेविन बना देता हूँ।

तुम बच्चे जानते हो बाप स्वर्ग का मालिक बनाने आये हैं। ऐसे बाप को बहुत प्यार से याद करो। तुमको देख और भी ऐसे कर्म करेंगे। इसको ही कहा जाता है - अलौकिक दिव्य कर्म। ऐसे मत समझो कोई नहीं जानेंगे। ऐसे निकलेंगे जो तुम्हारे यह चित्र भी ले जायेंगे। अच्छे-अच्छे चित्र बनें तो स्टीमर भराकर ले जायेंगे। स्टीमर जहाँ-जहाँ खड़ा रहता है वहाँ यह चित्र लगा देंगे। तुम्हारी बहुत सर्विस होनी है। बहुत उदारचित हुण्डी भरने वाले सांवलशाह भी निकलेंगे जो ऐसे काम करने लग पड़ते हैं। ताकि सबको मालूम पड़े कि यह कौन है जो इस पुरानी दुनिया को बदल और नई दुनिया स्थापन करते हैं। तुम्हारी भी पहले तुच्छ बुद्धि थी, अभी तुम कितने स्वच्छ बुद्धि बने हो। जानते हो हम इस ज्ञान और योगबल से विश्व को हेविन बनाते हैं। बाकी सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे।

World Almighty Authority

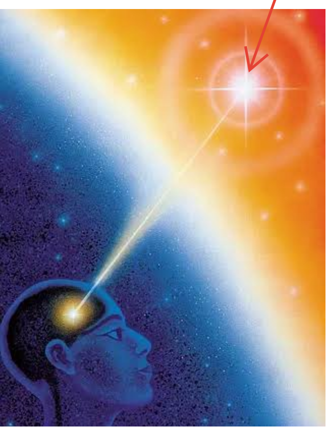

03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुम्हें भी अथॉरिटी बनना है। बेहद के बाप के बच्चे हो ना। शक्ति मिलती है याद से। बाप को वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। सभी वेदों शास्त्रों का सार बताते हैं। तो बच्चों को कितना उमंग रहना चाहिए सर्विस का। मुख से ज्ञान रत्नों के सिवाए और कुछ न निकले। तुम हर एक रूप-बसन्त हो। तुम देखते हो सारी दुनिया सब्ज (हरी-भरी) बन जाती है। सब कुछ नया, वहाँ दु:ख का नाम नहीं। पांच तत्व भी तुम्हारी सर्विस में हाज़िर रहते हैं। अभी वह डिससर्विस करते हैं क्योंकि मनुष्य लायक नहीं हैं। बाप अभी लायक बनाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) रूप-बसन्त बन मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकालने हैं। सर्विस के उमंग में रहना है। याद में रहना और सबको बाप की याद दिलाना - यही दिव्य अलौकिक कार्य करना है।

2) सच्चा-सच्चा आशिक बन एक माशूक पर फिदा होना है अर्थात् बलि चढ़ना है, तभी सच्ची दीपावली होगी।

03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-

विश्व महाराजन की पदवी प्राप्त करने वाले सर्व शक्तियों के स्टॉक से सम्पन्न (भरपूर) भव

जो विश्व महाराजन की पदवी प्राप्त करने वाली आत्मायें हैं उनका पुरुषार्थ सिर्फ अपने प्रति नहीं होगा।

ये पक्का समझ लो..

अपने जीवन में आने वाले विघ्न वा परीक्षाओं को पास करना - यह तो बहुत कॉमन है लेकिन जो विश्व महाराजन बनने वाली आत्मायें हैं उनके पास अभी से ही सर्व शक्तियों का स्टॉक भरपूर होगा। उनका हर सेकण्ड हर संकल्प दूसरों के प्रति होगा। तन-मन-धन समय श्वांस सब विश्व कल्याण में सफल होता रहेगा।

Understand the Subtle Mechanism

Mind well

Point to ponder very deeply...

स्लोगन:- एक भी कमजोरी अनेक विशेषताओं को समाप्त कर देती है इसलिए कमजोरियों को तलाक दो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

03-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

स्वयं और सर्व के प्रति मन्सा द्वारा

योग की शक्तियों का प्रयोग करो

अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो।

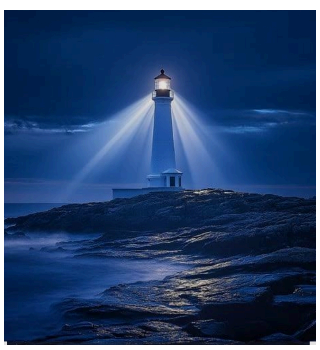

इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना।

इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्राब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

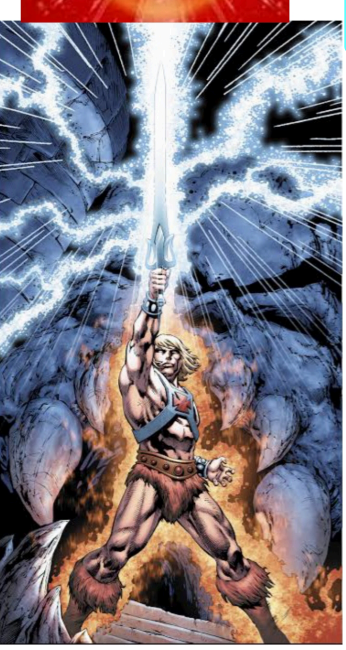

"I am the master of this universe."

Most Powerful Man in the Universe

60 सभी अंगद के समान अचल हो? माया के किसी भी प्रकार की हलचल में भी अचल। माया का कोई भी वार स्थिति को हिला न सके। हिलने का कारण क्या होता है? निश्चय का फाउन्डेशन मज़बूत न होने के कारण ही हिलते हैं। अगर निश्चय हो कि कल्याणकारी समय है, हर बात में कल्याण है, तो कितने भी तुफान क्यों न आयें लेकिन हिला नहीं सकते। अब निश्चय के फाउन्डेशन को तीव्र पुरुषार्थ का पानी देकर मज़बूत करो तो सदा अंगद के समान रहेंगे। माया के वार को वार नहीं समझेंगे। अभी हिलने का समय गया, यदि अभी भी हिलते रहे तो लास्ट पेपर में भी हिल जायेंगे तो फिर जन्म-जन्म के लिए फेल हो जायेंगे। इसलिए स्मृति के संस्करण मज़बूत करो। सदा याद रखो कि यह अंगद का यादगार हमारा ही

Call of time/समय की पुकार

यादगार है तो शक्ति आयेगी।

3/10/25

(21.12.1978)

6.7 दिव्य-बुद्धि को यूज़ करो

6.7.1 दिव्य-बुद्धि को यूज़ करने के अभ्यासी बनो :

3/10/25

बापदादा द्वारा सभी बच्चों को बुद्धि रूपी लिफ्ट की गिफ्ट मिली हुई है। गिफ्ट तो सबको मिली हुई है, लेकिन उसको कार्य में लाना हरेक के ऊपर है। यह बहुत पॉवरफुल और बहुत सहज लिफ्ट की गिफ्ट है। सेकेण्ड में जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। यह वण्डरफुल लिफ्ट तीनों लोकों तक जाने वाली है। लिफ्ट द्वारा जितना समय जिस लोक का अनुभव करना चाहो, उतना समय वहाँ स्थित रह सकते हो। इस लिफ्ट को विशेष यूज़ करने की विधि है — अमृतवेले केयरफुल बन, स्मृति के स्वीच को यथार्थ रीति से सेट करो, तो सारा दिन ऑटोमेटिकली चलती रहेगी। सेट करना तो आता है ना! अच्छी तरह से अभ्यासी हो ना! दिव्य-बुद्धि रूपी लिफ्ट सारे दिन में कहाँ अटकती तो नहीं है? यह लिफ्ट सिर्फ संगमयुग पर ही प्राप्त होती है। अभी नहीं तो कभी नहीं

आज मुज आत्मा सजनी की मेरे प्यारे साजन से और उस प्राणप्यारे साजन की मुज सजनी से कुछ खट्टी कुछ मीठी अर्थात मजेदार रूह रीहान।

##########

song
Click

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

(मेरे प्यारे साजन,
मेरा मन जो की अब आप से ही लगा/जुड़ा रहता है जिससे की अब तो मेरे जिया का ये सारा गाँव आपका हुआ अर्थात ये दिल अब आपका और सिर्फ आपका हुआ।)

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware

Le khela maine jiya ka, jiya ka, jiya ka hai daav re
(और साथ ही साथ आपको पाने के लिए मैंने दिल/जान की बाज़ी लगा दी हैं।)

Musaafir hoon main door ka
Deewana hoon main dhoop ka
Mujhe na bhaye.. na bhaye, na bhaye chaanv re
(ओ मेरी प्यारी सजनी,
मैं हसीन मुसाफिर बहुत दूर, परमधाम से आया हुआ हूँ।
और मैं तो धुप/पवित्रता का ही दीवाना हूँ,
मुझे रिंचक मात्र भी छाँव/अपवित्रता भाति/पसंद नहीं हैं।)

हसीन मुसाफिर
द्वारा शिवबाबा

समझाया है - तुम सब भक्तियां हो। मैं हूँ भगवान, ब्राइडग्रुम। तुम हो ब्राइड्स। तुम सब मुझे याद करते हो। मैं मुसाफिर बहुत ब्युटीफुल हूँ। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को खूबसूरत बनाता हूँ। 9/9/25

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

#####======$$$$$
【मैं आत्मा सजनी】
Aisi kaisi boli tere naino ne boli
Jaane kyon main doli
Aisa lage teri ho li main, tu mera..

(मेरे नयनो के नूर मेरे प्यारे साजन,
तुम्हारे नयनों ने ऐसी तो कैसी बोली बोली, जिससे की मुझे पता भी न रहा अर्थात सुधबुध भूल कर तुम्हारे प्यार में डोलने लगी अर्थात मगन/पागल हो गई।
और ऐसा लगा जैसे की मैं तो तुम्हारी हुई,
और तुम सिर्फ और सिर्फ मेरे......)

मुरली

(शिव साजन:)
mm.. Tune baat kholi kacche dhaago me piro li
Baaton ki rangoli se na khelun aise holi main
naa tera..
(ओ मेरी भोली सजनी 【भोली अर्थात जो माया के सभी रूपों को जानती नहीं की माया भी सर्वशक्तिमान हैं और एक पल की भी गफलत तुजे मेरा होने नहीं देंगी अर्थात दूर कर देंगी】,

तूने बाते तो बहुत ही अच्छी अच्छी और मीठी मीठी बोल के बातो की बहुत बड़ी और बापदादा को आकर्षित करने वाली माला ही बना ली।

परंतु सिर्फ ऐसी प्यारी प्यारी बातो की रंगोली से मैं तुम्हारे साथ होली नहीं खेलूंगा अर्थात मुझे तुमने जो भी बातों रूपी वायदे किये हैं उसे practical कर के दिखाओ।

तो जब तक तुम practical proof नहीं देती तब तक मैं तुम्हारा नहीं बन सकता।)

【मैं आत्मा सजनी】
O.. kisi ka toh hoga hi tu
Kyun na tujhe main hi jeetun
(ओ मेरे प्यारे दिलतख्तनशीं साजन,
ये बात तो आपको माननी ही पड़ेंगी की किसी न किसी के आप साजन तो बनेंगे ही।
तो आपको क्यों न मैं ही जीतूं?

फिर चाहे उसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुक्तू करनी पड़े।

मेरे प्यारे साजन,
Please Underline the word कोई भी।)

【शिव साजन मंद मंद मुस्कुराते हुए बोले की..】
Khule khabon me jeete hain, jeete hain baawre
(मैं सारी श्रुष्टी का मालिक हूँ और मुझे पाने के लिए तुम जैसी कई सारी आत्माओ रूपी बाँवरी/पागल सजनिया ऐसे ही ख्वाबों में जीती हैं।

उसे ये मालुम नहीं की मुझे पाने के लिए कितनी कठिनायों का सामना करना पड़ेंगा, कितनी दृढ़ता रखनी होंगी।)

【मैं आत्मा सजनी】
Mann ke dhaage, o mann ke dhaage
Dhaage pe saanwre
Dhaage pe saanwre
Hai likha mene tera hi, tera hi, tera hi to naam re
(ओ मेरे मन के मीत,
चाहे आप मानो या न मानो परंतु मैंने जब से ब्राह्मण जन्म लिया हैं तबसे आपको पाने का ही लक्ष्य रखा हैं अर्थात मैंने मेरे मन के धागों पर सिर्फ और सिर्फ आपका ही नाम लिखा हैं।

और आप देखते जाइए - जो भी बातें मैंने कही हैं आपसे, उसको चाहे कितने ही कष्ट सहन कर के या फिर मर कर भी पूरा करेंगे।)

#####$$$$$$#####

【मैं आत्मा सजनी अपने मन ही मन】
Ras bundiya nayan piya raas rache
(मेरे नयनो की रस बून्द अर्थात मेरे नयनो के नूर मेरे साजन,
आप जब दादी गुलज़ार के तन में आते हो और stage पर खड़ी सभी आत्मा रूपी गोपिओ के साथ रास रचते हो और मिलते हो - जैसी दादी जानकीजी से मिलते हो।)

Dil dhad dhad dhadke shor mache
(तो दूर बैठी मुज आत्मा के इस दिल में अपरम अपार गति से धड़कने शोर मचाती हैं और मैं पागल बन सोचती हूँ की मैं कब दादी जी के मुआफिक ही साकार में तुमसे मिलूंगी?)

Yun dekh sek sa lag jaaye
Main jal jaaun bas pyaar bache
(और दादी को आपसे ऐसे मिलते हुए देख,

आप शमा का मुज परवाने पर शेक सा लगता हैं और उस ही शेक के कारन मैं इस देह अभिमान और सर्व विकारो सहित आप शमा पर एक पल की भी सोच बिना फ़िदा हो जाती हूँ , जिससे की बस आप और मैं अर्थात हमारा प्यार शेष रह जाता हैं।)

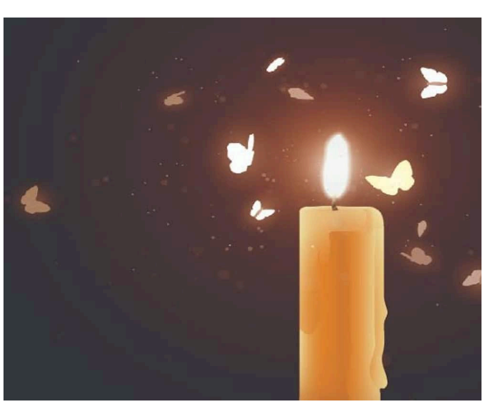

####$$$$%%%%
【आखिर भी वह दिन अब आया की आया, जब मेरे प्यारे साजन आप मुझसे कहेंगे की..】

Aise dore daale kaala jaadu naina kaale
Tere main hawaale hua seene se laga le
Aa.. main tera...
(मेरी सिकिलधि सजनी,
तुम्हारी ध्रुव के मुआफिक लगन के कारन, और अर्जुन के मुआफिक तुम्हारी नज़रे जो सदा ही मुज पर टीकी रहती हैं अर्थात तुम्हारा मुझे पाने का ही एक मात्र जो लक्ष्य हैं और जब की अब आखिर वो लक्ष्य अर्थात मुझे पा ही लिया हैं तो ...

मैं भी अब तुम्हारे हवाले हुआ हूँ - तो आ जाओं मेरी बाहों में और मुझे अपने सीने से लगा लो अर्थात बाहों में ले लो।

तो अब मैं आख़िरकार सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा हुआ।)

O.. dono dheeme dheeme jalein
Aaja dono aise milein
Zameen pe laage, na tere, na mere paanv re
(सारे कल्प के हिसाब से जो अब थोडा सा संगम का समय बचा हुआ हैं उसमे हम सच्चे प्यार की अगन में एक दूसरे में समा कर ऐसे धीमे धीमे जले की जिससे तुम्हारी 5000 वर्षो की प्यास बुज जाएँ।

और ऐसे combined रहे की उस स्थूल वतन या देहभान रूपी जमीं पे एक पल के लिए भी तुम्हारे पाँव न लगे और मैं तो हूँ ही परमधाम निवासी।)

Shiv Shakti (आत्मा)

Manva laage.. manva laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

【मैं आत्मा सजनी】
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...
(मेरे प्यारे साजन,
बस अब तो मुझे रहना ही हैं तुम्हारे नैनो की ही छाँव में।)

Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...